HISTORY

B.A.PART-I (Hons)

Paper-II (The Rise of Modern west)

Unit-IV, (Causes Of The Rise Of Mercantilism)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 83

वाणिज्यवाद के उदय के कारण

(CAUSES OF THE RISE OF MERCANTILISM)

"वाणिज्यवाद" आधुनिक अर्थशास्त्र का शब्द है। साधारण भाषा में इसका अर्थ है सरकार का व्यापार तथा उद्योग पर नियंत्रण। इस शब्द का प्रयोग सबसे पहले एडम स्मिथ ने किया था। वाणिज्यवाद की मूल धारणाएं थी कि व्यापार धन प्राप्त करने का स्रोत था और कोई व्यक्ति या देश अधिक से अधिक सोना चांदी प्राप्त करके ही धनी हो सकता था। इंग्लैंड में इस विचारधारा को वाणिज्यवाद कहा गया। इस विचारधारा को फ्रांस में कोलबर्टवाद और जर्मनी में कैमरलिनवाद कहा गया।

वाणिज्यवाद के उदय के कारण निम्नलिखित थे, जो इस प्रकार हैं

(1) पुनर्जागरण--

1453 ई. के बाद इटली से पुनर्जागरण आरम्भ हुआ था। पश्चिमी यूरोप के देशों पर इसका प्रभाव पड़ा था। पुनर्जागरण से बौद्धिक जागृति आयी, अन्धविश्वास समाप्त हुए और लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हुआ। इस बौद्धिक जागृति के कई महत्वपूर्ण परिणाम हुए। अब आध्यात्मिकता के स्थान पर भौतिकवादी दृष्टिकोण का विकास हुआ और मनुष्य का उद्देश्य मानव-जीवन को अधिक से अधिक सुखी बनाना तथा धन एकत्र करना हो गया। मनुष्य की आर्थिक गतिविधियों को इस भौतिकतावादी आकांक्षा ने अधिक व्यापक कर दिया। नवीन भौगोलिक मार्गों की खोज लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से की गई और उपनिवेशों की स्थापना हुई। इस प्रकार के सामाजिक कार्यों के लिए राजाओं का सहयोग आवश्यक था। अत: राजाओं ने उपनिवेशों की स्थापना, सामुद्रिक व्यापार के लिये आर्थिक तथा सैनिक सहायता दी।

(2) धर्म सुधार आन्दोलन--

वाणिज्यवाद के विकास में धर्म-सुधार आंदोलन ने भी अपना योगदान दिया। कैथोलिक चर्च ने त्याग और भौतिकवाद के विरोध का उपदेश दिया। व्यक्ति के बौद्धिक चिन्तन को अन्धविश्वासों के कारण स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थी। विचार-स्वातंत्र्य की प्रोटेस्टेंट धर्म ने प्रेरणा दी और आर्थिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहित किया। प्रोटेस्टेन्ट धर्म ने राजनीतिक क्षेत्र में राष्ट्रीय विचारधारा को सुदृढ़ किया। राष्ट्र के धन का उद्योग तथा व्यापार में प्रयोग करना, मितव्ययता करना, राष्ट्रीय धन को पोप के पास न जाने देना,

प्रोटेस्टेन्ट आन्दोलन की प्रमुख विशेषता थी। व्यापारियों तथा पूँजीवादियों ने इस आन्दोलन का समर्थन किया। इन वर्गों को इस आंदोलन के फलस्वरूप चर्च की सम्पत्ति मिली और उपनिवेशों की स्थापना तथा सामुद्रिक व्यापार को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

(3) पूंजीवाद का प्रभाव--

पुनर्जागरण के बाद पश्चिमी यूरोप में जिस नवीन आर्थिक जीवन का निर्माण हो रहा था, वाणिज्यवाद के उत्थान में उसने भी योगदान दिया। अब स्थानीय स्तर पर व्यापार नहीं होता था। यह अब राष्ट्रीय स्तर पर होने लगा था। अब स्वतंत्र श्रमिक उत्पादन करता था। इन परिवर्तनों के कारण मुद्रा में वृद्धि हो गई। अब राष्ट्र की आवश्यकताओं के लिये उत्पादन सीमित नहीं था बल्कि निर्यात करना इसका उद्देश्य था। उत्पादन के लिये बड़े पैमाने पर उपनिवेश आवश्यक हो गये जहाँ से कच्चा माल प्राप्त करके निर्मित माल भेजा जा सकता था। लाभ प्राप्त करना इस आयात-निर्यात व्यापार का उद्देश्य था। सोना और चाँदी के रूप में यह लाभ अपने देश में लाया जाता था।

(4) राजाओं की नीति--

वाणिज्यवाद को पश्चिमी यूरोप के राजाओं की नीतियों ने भी प्रोत्साहन दिया। इस समय इटली के नगर राज्य व्यापार के केन्द्र नहीं थे बल्कि अटलान्टिक महासागर के तट पर स्थित नवीन राष्ट्रीय राज्य इंग्लैण्ड, फ्रांस, स्पेन, पुर्तगाल और हॉलैण्ड व्यापार के केन्द्र थे। पूँजीवादी प्रभाव के कारण प्रत्येक राष्ट्रीय राज्य का राजा अपने राज्य को धनी बनाना चाहता था। अत: उनकी व्यापार में विशेष रुचि थी। प्रत्येक राज्य के व्यापारी भी अपने हितों की रक्षा तथा व्यापार के विस्तार के लिये राज्य की सहायता और संरक्षण चाहते थे। राजाओं ने इन हितों की रक्षा के लिये आर्थिक और सैनिक सहायता दी। व्यापार और उद्योग की रक्षा के लिये राजाओं ने संरक्षण की नीति अपनायी जो इटली के नगर राज्यों में मध्यकाल में अपनायी गई थी। इस प्रकार की नीति को राष्ट्रीय वाणिज्यवाद कहा गया है। राज्यों में आर्थिक जीवन राष्ट्रीय भावना तथा पूँजीवाद के उत्थान के कारण परिवर्तित हो गया था। इस परिवर्तन ने वाणिज्यवाद के उत्थान में योगदान किया था।